अथ दशमोऽध्यायः

विभूतियोग

(श्रीभगवान् का ऐश्वर्य)

श्रीभगवानुवाच ।
भूय एव महाबाहो श्रृणु मे परमं वचः ।
यत्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया ।।१।।

श्रीभगवान् उवाच=श्रीभगवान् ने कहा; **भूयः**=फिर; **एव**=निःसन्देह; **महा-बाहो**=हे महाबाहु अर्जुन; **श्रृणु**=सुन; **मे**=मेरे; **परमम्**=परम; **वचः**=वचन को; **यत्**=जो; **ते**=तुझे; **अहम्**=मैं; **प्रीयमाणाय**=अपना प्रिय समझ कर; **वक्ष्यामि**=कहता हूँ; **हितकाम्यया**=तेरे कल्याण के लिए।

अनुवाद

श्रीभगवान् ने कहा, हे सखे! हे महाबाहु अर्जुन! मेरे परम वचन को फिर सुन, जो मैं तुझे अपना प्रिय समझकर तेरे कल्याण के लिये कह रहा हूँ और जिसे सुनकर तू अतिशय आनन्द का अनुभव करेगा।।१।।

तात्पर्य

पराशर मुनि के अनुसार जो समग्र बल, समग्र यश, समग्र ऐश्वर्य, समग्र ज्ञान, समग्र श्री और समग्र वैराग्य—इन छः ऐश्वर्यों से युक्त हो, उसे **भगवान्** कहते हैं। पृथ्वी पर अपने अवतरण के समय श्रीकृष्ण ने इन षडैश्वर्यों का पूर्ण प्रकाश किया